All India Federation of Astrologers' Societies (Regd.)

September- 2009

Jyotish Bhushan- Paper 1

Time- 3 hrs. **MM: 100**

Questions No. 1 & 2 are compulsory and attempt any four from others.

प्रश्न 1 और 2 अनिवार्य हैं तथा अन्य में से कोई 4 प्रश्न हल करें।

Q.1. निम्नलिखित में से सही या गलत संक्षिप्त कारण सहित बतायें –

(i) मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक की गुरु की महादशा या अन्तरदशा शुभ रहेगी।

(ii) राहु यदि वृष राशि में तथा त्रिषडाय भाव में स्थित हो तो राहु की दशा में शुभ फलों की प्राप्ति नहीं होगी।

(iii) गुरु और शनि का गोचर सप्तम भाव से या लग्न से हो तो विवाह की संभावना होती है।

(iv) अष्टकवर्ग में पिता से संबंध जानने के लिए सूर्य के भिन्नाष्टक में सूर्य से नवम भाव में स्थित प्राप्त शुभ रेखा एवं सूर्य का शोध्यपिंड देखा जाना चाहिए।

(v) यदि वृष लग्न का व्यक्ति बीमार हो और शुक्र छठे भाव में स्थित हो तो शुक्र का रत्न धारण करना उचित उपाय नहीं होगा।

Answer Q.No. 1.

(i) मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक की कुंडली में गुरु सप्तम भाव का स्वामी होकर बाधक एवं मारक होगा, अतः महादशा एवं अंतरदशा दोनों अशुभ रहेगी।

(ii) राहु त्रिषडाय भाव में यदि वृष राशि में स्थित हो तो राहु की दशा में अत्यंत शुभ परिणाम देगा, क्योंकि राहु वृष राशि में उच्च का होता है। त्रिषडाय में सबसे शुभ परिणाम एकादश भाव में देगा।

(iii) गुरु एवं शनि का गोचर सप्तम भाव या लग्न से हो तो निश्चित ही विवाह की संभावनाएं प्रबल होगी, क्योंकि गुरु विवाह का कारक एवं शनि स्थान वृद्धि प्रभावनुरूप शुभ फल देगा।

(iv) अष्टकवर्ग में पिता से संबंध जानने के लिए सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में सूर्य से नवम भाव में स्थित शुभ रेखा एवं सूर्य का शोध्यपिंड देखा जाना चाहिए। क्योंकि सूर्य पिता का कारक एवं नवम भाव से भी पिता का विचार किया जाता है।

(v) वृष लग्न में शुक्र लग्नेश के साथ–साथ षष्ठेश भी है। क्योंकि शुक्र स्वराशि का षष्ठ भाव में स्थित है, अतः शुक्र रत्न हीरा अथवा जरकन धारण कराया जा सकता है, स्वास्थ्य लाभ हेतु उत्तम है। लग्नेश को षष्ठ भाव या षष्ठेश का दोष नहीं लगता है।

Q.2. सही विकल्प का चुनाव करके उत्तर संख्या उत्तर पुस्तिका में लिखें।

(a) यदि किसी कुंडली में कोई ग्रह शुभ और अशुभ दोनों भाव का स्वामी हो तो इसका उचित उपाय होगा –

(i) रत्न धारण करना
(ii) संबंधित ग्रह की वस्तु का जल प्रवाह करना
(iii) संबंधित ग्रह का मंत्र जाप करना
(iv) संबंधित ग्रह का दान करना

(b) सर्वाष्टक वर्ग से निम्न का विचार संभव है –

(i) ग्रहों का भविष्य कथन
(ii) भावों का भविष्य कथन
(iii) नक्षत्र का भविष्य कथन
(iv) राशियों का भविष्य कथन

(c) चंद्र से सभी ग्रहों का गोचर निम्न भाव में शुभ माना जाता है –

(i) केंद्र भाव से
(ii) त्रिकोण भाव से
(iii) त्रिषडाय भाव से
(iv) एकादश भाव से

(d) विपरीत वाम वेध होता है यदि –

(i) ग्रह अशुभ भाव से गोचर करे और उसी समय कोई अन्य ग्रह शुभ स्थान से गोचर कर रहा हो
(ii) ग्रह शुभ स्थान से गोचर करे और उसी समय कोई अन्य ग्रह अशुभ स्थान से गोचर कर रहा हो
(iii) ग्रह शुभ स्थान से गोचर करे और कोई अन्य ग्रह अशुभ स्थान से गोचर न कर रहा हो
(iv) इनमें से कोई नहीं

(e) शनि का जन्मकालिक चंद्रमा से निम्न भावों में गोचर शुभ है –

(i) 1, 4, 7, 10
(ii) 2, 4, 5 8, 9, 12
(iii) 3, 6, 11
(iv) 1, 3, 6, 7, 10, 11

Answer Q.No. 2.

(a) (ii) संबंधित ग्रह का मंत्र जप करना

(b) (ii) भावों का भविष्य कथन

(c) (ii) त्रिकोण भाव से

(d) (i) ग्रह अशुभ भाव से गोचर करे और उसी सम कोई अन्य ग्रह शुभ स्थान से गोचर कर रहा हो।

(e) (iii) 3, 6, 11

Q.3. In the given horoscope compute the Sodhya Pindas of Mars and Venus and clearly show the calculations of Bhinnashatak Varga, Trikona Shodhan, Ekadhipati Shodhan, Rashi Pinda and Grah Pinda. Tell the probable good period for marriage on the basis of transit. **20**

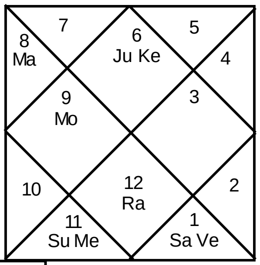

Answer Q.No. 3.

मंगल का भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	लग्न	कुल
मेष	*1	0	0	1	*0	1	0	0	3
वृष	0	0	1	0	0	0	1	0	2
मिथुन	0	1	1	1	0	1	0	1	5
कर्क	1	1	0	1	0	1	0	1	5
सिंह	0	1	1	0	0	0	0	0	2
कन्या	0	*0	1	0	1	0	0	*1	3
तुला	1	0	0	0	0	0	1	0	2
वृश्चिक	1	0	*1	1	1	0	0	1	5
धनु	1	0	1	1	0	1	*0	0	4
मकर	1	0	0	0	0	0	0	0	1
कुंभ	1	1	1	*0	1	*0	1	1	6
मीन	0	0	0	0	1	0	0	0	1
कुल	**7**	**4**	**7**	**5**	**4**	**4**	**3**	**5**	**39**

शुक्र का भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	लग्न	कुल
मेष	*0	1	1	0	*1	1	1	1	6
वृष	0	1	0	0	1	0	0	1	3
मिथुन	1	1	0	0	1	1	0	0	4
कर्क	1	1	1	0	1	1	1	1	7
सिंह	1	0	0	0	1	0	1	0	3
कन्या	0	*0	1	1	0	0	0	*1	3
तुला	0	0	1	0	0	1	1	1	4
वृश्चिक	1	0	*0	0	1	0	1	1	4
धनु	1	0	0	1	1	1	*1	1	6
मकर	1	1	1	1	1	0	1	1	7
कुंभ	1	0	0	*0	1	*0	1	0	3
मीन	0	0	1	0	0	0	1	0	2
कुल	**7**	**5**	**6**	**3**	**9**	**5**	**9**	**8**	**52**

Continue.....

मंगल का त्रिकोण शोधन

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
प्राप्त रेखाएं	3	2	4	2	3	1	5	2	6	5	5	1
न्यूनतम अंक	2	2	2	1	1	1	2	2	2	1	1	1
	1	0	2	1	2	0	3	0	4	4	4	0

शुक्र का त्रिकोण शोधन

राशि	1	5	9	2	6	10	3	7	11	4	8	12
प्राप्त रेखाएं	6	3	6	3	3	7	4	4	3	7	4	2
न्यूनतम अंक	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	1	2
	3	0	3	0	0	4	1	1	0	5	2	0

BAV of Mars after TKS

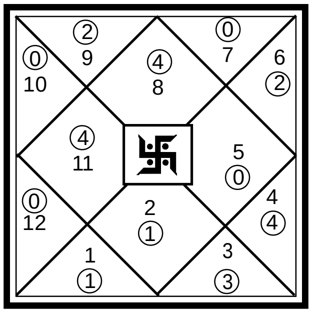

BAV of Venus after TKS

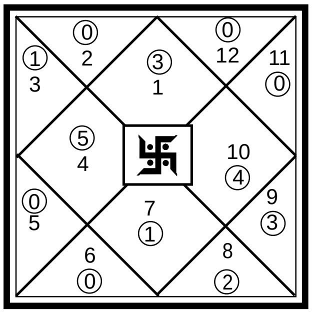

मंगल का शोध्य पिंड

राशि	ग्रह	BAV of Mars	BAV of Mars other TKS	BAV of Mars other EDS(A)	ग्रह गुणाकर (B)	ग्रह गुणक AxB=C	राशि गुणाकर (D)	राशि गुणक AxD=E
मेष	श.शु.	3	1	1	5+7=12	12	7	7
वृष		2	1	0	–	–	10	0
मिथुन		5	3	1	–	–	8	8
कर्क		5	4	4	–	–	4	16
सिंह		2	0	0	–	–	10	0
कन्या	गु.के.	3	2	2	10	20	5	10
तुला		2	0	0	–	–	7	0
वृश्चिक	मं.	5	4	4	8	32	8	32
धनु	चं.	4	2	0	5	0	9	0
मकर		1	0	0	–	–	5	0
कुंभ	सू.बु.	6	4	4	5+5=10	40	11	44
मीन	रा.	1	0	0	–	–	12	0
					ग्रह पिण्ड	104	राशि पिण्ड	117

शोध्य पिण्ड = ग्रह पिण्ड + राशि पिण्ड

= 104+117 =221

Continue.....

शुक्र का शोध्य पिंड

राशि	ग्रह	BAV of Ven.	BAV of Ven other TKS	BAV of Ven other EDS(A)	ग्रह गुणाकर (B)	ग्रह गुणक AxB=C	राशि गुणाकर (D)	राशि गुणक AxD=E
मेष	श.शु.	6	3	3	5+7=12	36	7	21
वृष		3	0	0	—	—	10	0
मिथुन		4	1	1	—	—	8	8
कर्क		7	5	5	—	—	4	20
सिंह		3	0	0	—	—	10	0
कन्या	गु.के.	3	0	0	10	0	5	0
तुला		4	1	1	—	—	7	7
वृश्चिक	मं.	4	2	2	8	16	8	16
धनु	चं.	6	3	3	5	15	9	27
मकर		7	4	4	—	—	5	20
कुंभ	सू.बु.	3	0	0	5+5=10	0	11	0
मीन	रा.	2	0	0	—	—	12	0
					ग्रह पिण्ड	67	राशि पिण्ड	119

शोध्य पिण्ड = ग्रह पिण्ड + राशि पिण्ड

= 67+119 = 186

विवाह का अनुमानित समय $= \dfrac{\text{गुरु का शोध्य पिण्ड x शुक्र से सप्तम राशि में प्राप्त रेखाएं}}{12}$

$= \dfrac{186 \text{ x } 4}{12}$

$= \dfrac{744}{12}$

शेष बचा शून्य अर्थात् मीन राशि होगी।

मीन राशि की त्रिकोण राशियां 4,8,12 होगी। अर्थात जब गोचर का शुक्र इन राशियों पर से गुजरेगा तब विवाह होने की संभावना होगी।

वर्तमान में शुक्र का गोचर सिंह राशि से हो रहा है। 30 नवंबर के बाद शुक्र का गोचर वृश्चिक राशि पर से होगा तब विवाह होने की संभावना होगी।

Q.4.किसी जातक का जन्म 11.03.1969 को 19.15 बजे पटना में हुआ, उसके चंद्रमा के अंश 8ˢ00°40'51" हैं, तो जातक के लिए निम्न ज्ञात करें :

(i) जन्म समय योगिनी अन्तरदशा का शेष अवधिकाल

(ii) वर्तमान समय में योगिनी अन्तरदशा बताएं

(iii) 53वें जन्म दिवस पर योगिनी महादशा

Answer Q.No. 4.

Degree of Moon = 8^{S} 00° 40' 51"
= 8x30+40'+51"
= 240°+40'+51"
= 240x60+40'+51" = 14441'
= 14441÷800

Completed Nakshatra = 18th Jyestha
Running Nakshatra 19th Mool Ist charan
Pass out Nakshatra = 41÷759
Yogini Mahadasha = Janam Nakshatra +3 ÷8 = 7th Yogini Dasha
= 7th Yogini Dasha sidha value - 7 year
Total Nakshatra value = 800'
800' Nakshatra value = 7 year

1' " " = $\frac{7}{800}$

759' " $\frac{7}{800}$ x 759

= $\frac{5313}{800}$

Balance of yogini dasha = 6 year, 7 month, 20 days.
Date of birth = 11.3.1969

Birth of Date	=		1969	3	11
Balance yogini dasha sidha	=	(+)	6	7	20
			1975	11	01
Sankata Dasha	=	(+)	8	00	00
			1983	11	01
Mangla Dasha	=	(+)	1	00	00
			1984	11	01
Pingla Dasha	=	(+)	2	00	00
			1986	11	01
Dhanya Dasha	=	(+)	3	00	00
			1989	11	01
Bharamri Dasha	=	(+)	4	00	00
			1993	11	01
Bhadrika Dasha	=	(+)	5	00	00
			1998	11	01
Ulka Dasha	=	(+)	6	00	00
			2004	11	01

(i) जन्म समय योगिणी अंतरदशा का शेषफल = 4 महीने 10 दिन

(ii) जन्म समय योगिणी अन्तरदशा = उल्का का अन्तरदशा

(iii) 53वें जन्म दिन पर योगिनी महादशा = जन्म ताः 11.3.1969 +53 = 2022(उ. धान्या योगिनी महादशा होगी।)

Q.5. वर्तमान में शनि के कन्या राशि में गोचर के कारण किन–किन राशियों के जातकों को शनि की साढ़ेसाती प्रभावित कर रही है उसका वर्णन करें। साथ ही उचित उपायों का उल्लेख करें।

Answer Q.No. 5.

वर्तमान समय में शनि के कन्या राशि में गोचर करने के कारण सिंह राशि एवं तुला राशि वालों पर साढेसाती का प्रभाव होगा।

- सिंह राशि के जातकों के लिए शनि का प्रभाव साढ़ेसाती में अधिक होगा। क्योंकि सिंह राशि शनि के लिए शत्रु राशि है।
- कन्या राशि वाले जातकों के लिए वर्तमान समय का शनि का गोचर सामान्य रहेगा क्योंकि कन्या राशि बुध की राशि है अर्थात् बुध की राशि मित्र राशि है।
- तुला राशि वाले जातकों के लिए शनि की साढ़ेसाती अच्छी शुभ फलदायक होगी। क्योंकि शनि और शुक्र आपस में मित्र है और तुला राशि मित्र राशि है।
- शनि की साढ़ेसाती वर्तमान समय में वृश्चिक राशि, मीन राशि एवं मिथुन राशि वाले जातकों को भी प्रभावित करेगी।

उपसंहार

शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव शुभ अथवा अशुभ जातक की जन्मकुंडली में स्थित शनि की स्थिति जैसे उच्च, नीच, स्वराशि, शनि की डिग्री, शनि की युत, गोचर समयान्तराल में उस भाव में स्थित अन्य ग्रह एवं महादशा अंतरदशा आदि पर काफी हद तक निर्भर करता है, सारी स्थितियों का ऑकलन कर ही शनि की साढेसाती के प्रभाव के किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है।

शनि की साढ़ेसाती में उपाय

1. शनि की साढ़ेसाती में जातक को अनुशासन में रहना चाहिए। कोई भी गलत कार्य ना तो सोचना चाहिए और ना ही करना चाहिए।
2. शनि का मंत्र जप करना चाहिए।
3. शनिवार के दिन काले कपड़े, काले तिल, सरसों का तेल आदि दान करना चाहिए।
4. लकड़ी के कोयला पानी में प्रवाह करना चाहिए।
5. हनुमान चालिसा का पाठ करना चाहिए।
6. लोहे के बर्तन में सरसों का तेल लेकर उसमें अपना चेहरा देखकर दान देना चाहिए।
7. शनिवार के दिन शाम को काले घोड़े की नाल या नाव की कील का जोड़ रहित छल्ला मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।
8. हर शनिवार को पीपल के पेड़ पर सांय सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए।
9. सरसों के तेल के दीपक में एक सिक्का डाल कर पीपल पेड़ पर दिपक जलाएं। दिपक जलाने के बाद सिक्का किसी गरीब को दान कर दें।
10. शराब का सेवन नहीं करना चाहिए।
11. काले तथा गहरे नीले कपड़ों का त्याग करना चाहिए।

यह उपाय श्रद्धा और विश्वास से करने पर जातक पर शनि का प्रभाव बहुत कम हो जाता है।

Q.6. "उदित तथा अनुदित काल सर्प योग" से आप क्या समझते हैं ? काल सर्पयोग कितने प्रकार के होते हैं ? इसके प्रभाव एवं उपायों का विस्तृत वर्णन करें।

Answer Q.No. 6.

उदित और अनुदित यह दोनों कालसर्प दोष ही है परंतु दोनों के प्रभाव अलग–अलग होते हैं।

1. उदित काल सर्प योग

जब जन्मकालिक राहु और केतु के एक तरफ सभी ग्रह आ जाये तब कालसर्प योग बनता है। राहु और केतु हमेशा वक्री चलते हैं और राहु केतु की ओर घड़ी की दिशा में चलते हैं। जब इस तरह सारे ग्रह स्थित हो जाये कि राहु सभी ग्रहों को ग्रसित करता चले तब उदित कालसर्पयोग बनता है और यह योग अति अशुभ होता है। क्योंकि राहु को मुख माना गया है और केतु को पूंछ माना गया है।

2. अनुदित काल सर्प योग

जब राहु घड़ी की दिशा में चले और कोई भी ग्रह बीच में ना आये दूसरे शब्दों में सारे ग्रह केतु और राहु के बीच में हो तब यह अनुदित कालसर्पयोग बनता है। इस योग में जातक संघर्ष करके सफलता को प्राप्त करता है।

प्रकार

कालसर्पयोग 12 प्रकार के होते हैं।

1. वासुकी 2. कुलिक 3. करकोटक 4. घातक 5. शेषनाग 6. शंखनाद 7 पद्मकाल 8. महापद्म काल 9 तक्षक 10. शंखचूर

11. अनंत 12. विषधर

कालसर्पयोग का प्रभाव

कालसर्पयोग जातक पर जरूर प्रभाव दिखाता है। कालसर्प चाहे आंशिक हो या पूर्ण इसमें जातक को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे कार्यों में रुकावट, घर परिवार में कलह, वैवाहिक जीवन में अस्थिरता, स्वास्थ्य संबंधी कई परेशानियों में जातक घिर जाता है। जबकि जातक पर उदित कालसर्प योग से प्रभावित हो तो जातक को कालसर्प योग की शांति अवश्य करानी चाहिए।

कालसर्प योग के प्रभाव को कम करने के उपाय

1. कालसर्पयोग का यंत्र घर में स्थापित करें और 43 दिनों तक यंत्र के सामने सरसों के तेल का दीपक जलाएं और पूजा करें।
2. ॐ नमः शिवाय का रोज 108 बार जप करें।
3. हनुमान चालिसा का 108 बार पाठ करें।
4. कबूतरों, पक्षीयों को जौ के दानें खिलाना चाहिए।
5. सावन के महीने में दही और मक्खन से ॐ हर–हर महादेव का उच्चारण करते हुए शिव का अभिषेक करना चाहिए।
6. सवा महीने तक लगातार शिव जलाभिषेक करना चाहिए।
7. कोड़ियों की सेवा करनी चाहिए।
8. काली छतरी एवं काले जूते गरीब को दान देना चाहिए।
9. जातक को महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।
10. सवा महीने तक जातक को अष्टगंध और लोहवान को उबाल कर स्नान करना चाहिए।

विशेष : कालसर्प योग की शांति पूजा में केवल श्रीखण्ड के चंदन का ही प्रयोग करना चाहिए। रोली और सिंदूर वर्जित है।

Q.7. प्रश्न 3 में दी गई जन्मकुंडली के लिए विंशोत्तरी दशाफल निर्णय के आधार पर बुध की सभी अंतर्दशाओं फलों का वर्णन करें। संक्षिप्त में वर्तमान गोचर के प्रभाव का वर्णन करें।

Answer Q.No. 7.

1. **सूर्य में बुध का अंतर** : जातक की जन्मकुंडली में सूर्य द्वादश भाव का स्वामी होकर षष्ठ भाव में बैठा हुआ है जो कि लग्नेश बुधका मित्र ग्रह है, सूर्य त्रिक भाव का स्वामी होकर दूसरे त्रिक भाव में बैठा है इस दशा में जातक को यश कीर्ति एवं सम्मान प्राप्त होगा।

2. **चंद्र में बुध का अंतर** : कन्या लग्न की कुंडली में एकादशेश चंद्रमा चतुर्थ भाव में मित्र राशि के घर में बैठा हुआ है जो कि सामान्यतः ठीक रहेगा किंतु पिता–पुत्र की शत्रुता के कारण कुछ शुभ एवं अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे, अर्थात वांछित शुभ परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

3. **मंगल में बुध का अंतर** : इस कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश होकर स्वराशि के तृतीय भाव में स्थित है जो कि लग्नेश बुध के प्रबल शत्रु है इस कारण इस अंतरदशा काल में जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट होंगे एवं पराक्रम की हानि होगी।

4. **राहु में बुध का अंतर** : कन्या लग्न की कुंडली हेतु प्रबल फलदायक ग्रह है जब भी राहु की महादशा आएगी सामान्यतः शुभ कारक रहेगी, जातक के लिए राहु में बुध का अंतर अत्यंत फलदायक रहेगा, क्योंकि राहु एवं बुध परम मित्र ग्रह है। अचानक उन्नति अवसर आएंगे, किंतु यदि शादी शुदा है तो पति पत्नी में मन मुटाव एवं तनाव की स्थिति भी आएगी।

5. **गुरु में बुध का अंतर** : कन्या लग्न हेतु गुरु अत्यंत बाधक एवं मारक ग्रह है, इस अंतर में जातक को मृत्यु तुल्य कष्ट, धन हानि, कुटुम्ब विच्छेद, वाणी विकार, वैवाहिक जीवन में मतभेद अथवा तलाक तक की स्थिति भी दे सकता है।

6. **शनि में बुध का अंतर** : कन्या लग्न की कुंडली हेतु शनि पंचमेश, षष्ठेश होकर परम योग कारक ग्रह है। शनि में बुध का अंतर जातक के लिए एक तरफ सौभाग्य, संतान कारक, शिक्षा कारक एवं दूसरी तरफ ऋण, रोग, शत्रु वृद्धि भी देगा, कुल मिलाकर काफी अच्छे परिणाम प्राप्त होना संभव है।

7. **बुध में बुध का अंतर** : कन्या लग्न की कुंडली में बुध अत्यंत योग कारक ग्रह है जो कि लग्नेश एवं दशमेश भी है। एक ही ग्रह का अंतर हालांकि परिणाम देने में असमर्थ रहता है, किंतु दो परम शुभकारी केंद्र त्रिकोण एवं केंद्र का स्वामी होने से शुभ परिणाम ही आएंगे।

8. **केतु में बुध का अंतर** : इस कुंडली में केतु लग्न में गुरु के साथ स्थित है किंतु बुध का मित्र ग्रह जो कि सामान्यतः शुभ कारक है लग्न में केतु स्वास्थ्य हानि, पित्त विकार एवं चर्म रोग देता है किंतु आध्यात्मिक बनाता है।

लग्न कुंडली

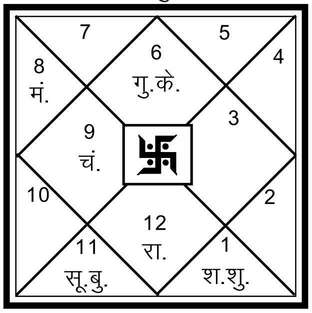

4.10.2009, 16.15
की गोचर स्थिति

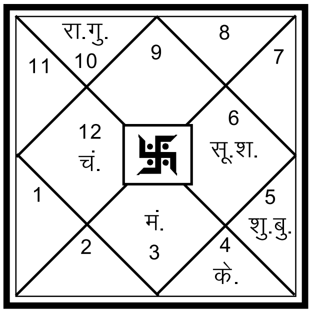

continue........

9. शुक्र में बुध का अंतर : कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र परम योग कारक ग्रह है यह नवम एवं द्वितीय भाव का स्वामी होकर अष्टम भाव में स्थित है नवमेश अष्टम भाव में भाग्य में छिद्र करेगा।

यह जातक धनु राशि का है एवं कन्या लग्न है, गोचर में मुख्यतः सूर्य, चंद्र, शनि एवं गुरु के गोचर का फल विशेष रूप से देखा जाता है। जातक की कुंडली में निम्न स्थिति है।

गोचर

चंद्रमा : इससे रोज की स्थिति का आंकलन करते हैं आज चंद्रमा मीन राशि में चतुर्थ भाव में है जो अगले दो दिन के लिए जातक को शुभ फल इंगित करते हैं।

सूर्य : सूर्य गोचर में दशम भाव में है जो अत्यंत शुभ कारक है, रोजगार वृद्धि, पद प्रतिष्ठा में लाभ का संकेत करता है।

शनि : शनि दशम भाव में गोचर में भ्रमण कर रहे हैं जो औसतन सामान्य शुभ कारक है किंतु सूर्य के सान्निध्य में आने से अपना शुभ फल देने में असमर्थ हैं।

गुरु : गुरु गोचर में द्वितीय भाव में राहु के साथ है जो कि अपना शुभ प्रभाव देने में असमर्थ है। अतः धन हानि, वाणी विकार, कुटुम्ब वैर आदि स्थितियां उत्पन्न होगी।

उपसंहार : किसी भी जातक के कुंडली में भविष्यवाणी अथवा वस्तु स्थिति का सटीक आंकलन करने हेतु गोचर, दशा एवं कुंडली में स्थित योगों का अवलोकन सर्वप्रथम अनिवार्य है।